पद ४१

(राग: पिलु - ताल: धुमाळी) भज नृतसुरमौली जन हो। श्रीमाणिक पदरजधूली घे। आत्मसुखा। घे स्वात्मसुखा।।धु.।। नाटकी हा अवधूतचि नटतो। विधि हर वनमाली।।१।। निजानंद प्रियधामा रामा। निर्गुण गुणशाली प्रभु हा।।२।। पूर्ण कृपें चिन्मार्तांडोदयीं बोधस्फूर्ति हरली जन हो।।३।।